बनना था।

- एएनसी ने उसके बाद के आम चुनावों में जीत हासिल की और नेल्सन मंडेला के साथ दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति के रूप में गठबंधन सरकार और उपराष्ट्रपति के रूप में एफडब्ल्यू क्लर्क का गठन किया गया।

रंगभेद विरोधी संघर्ष में भारतीय योगदान :

- 1946 में रंगभेदी सरकार के साथ व्यापारिक संबंध समाप्त करने वाला भारत पहला देश था।
- भारत ने बाद में सभी बातचीत समाप्त कर दी - राजनयिक, वाणिज्यिक, और सांस्कृतिक और खेल, केवल 1993 में बहाल किए जाने के लिए।
- भारत ने संयुक्त राष्ट्र, गुटनिरपेक्ष आंदोलन और अन्य बहुपक्षीय संगठनों में रंगभेद की निंदा की और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों के पक्ष में अग्रणी आवाज थी।
- 1960 के दशक से एएनसी का दिल्ली में कार्यालय था।

  भारत ने रंगभेद शासन की निंदा की है और इस संबंध में स्पष्ट रुख अपनाया। इस सन्दर्भ में भारत का संविधान सभी को समानता का अशिकर देता है. और किसी भी प्रकार के भेदभाव पर प्रतिबन्ध लगता है

19. ऐसी परिस्थितिया उत्पन्न हो गई थी जब 1971 का बांग्लादेश स्वतंत्रता संग्राम अपरिहार्य हो गया था,विश्लेषण करें। उन कारकों पर भी चर्चा कीजिए जिन्होंने पाकिस्तान पर भारत की जीत में मदद की।

बांग्लादेश का स्वतंत्रता संग्राम एक क्रांति थी और पूर्वी पाकिस्तान में बंगाली राष्ट्रवादी और आत्मनिर्णय आंदोलन के उदय से सशस्त्र संघर्ष छिड़ गया था। बांग्लादेश की स्वतंत्रता को भारत का सबसे सफल पड़ोसी हस्तक्षेप माना जाता है

वे कारण जिनकी वजह से 1971 का बांग्लादेश मुक्ति संग्राम हुआ

- **पूर्वी पाकिस्तान की आर्थिक शक्ति :** अधिकांश विदेशी मुद्रा पूर्वी पाकिस्तान से निर्यात द्वारा अर्जित की गई थी, जिसका भारत के साथ 1965 का बड़ा युद्ध होने पर खराब बचाव किया गया था।
- **शासन की असमानता :** पंजाब और पंजाबी-प्रभुत्व वाली सेना ने पाकिस्तान के जन्म के तुरंत बाद पाकिस्तान पर शासन किया। (1) सेवाओं में भी कोटा के माध्यम से पंजाबियों का वर्चस्व था लेकिन पूर्वी पाकिस्तान साक्षरता और उच्च शिक्षा में हावी था। (2) सिविल सेवा परीक्षा में शीर्ष सीटें हमेशा पूर्वी पाकिस्तान में जाती थीं।
- **सैन्य शासन** : जनरल अयूब खान ने 1958 में पाकिस्तान पर अधिकार कर लिया, पूर्वी पाकिस्तान की जरूरतों और मांगों को पूरी तरह से दबा दिया गया। 1962 तक, मार्शल लॉ जारी रहा और अयूब ने सरकार से कई राजनेताओं और सिविल सेवकों को हटा दिया और उनकी जगह सेना के अधिकारियों को नियुक्त कर दिया।
- **दूरी का पहलू :** भारत के एक हजार मील में विभाजित होने की अजीब घटना से पाकिस्तान नहीं निपट सका।
- **छह सूत्री कार्यक्रम खारिज :** पूर्वी पाकिस्तान की आर्थिक और राजनीतिक स्वायत्तता के लिए 1966 में मुजीब -उर-रहमान के छह सूत्री कार्यक्रम को खारिज कर दिया गया था।
- **उर्दू को लागू करना :** उर्दू को पाकिस्तान की «राष्ट्रीय भाषा» बनाया गया था। पूर्वी पाकिस्तान के अनुरोध और अरबी के विकल्प को ठुकरा दिया गया।
- **नरसंहार और शरणार्थी समस्याएं** : एक व्यवस्थित जातीय वध था जो नरसंहार के रूप में योग्य था। बंगालियों के बीच हिंदू अल्पसंख्यक का स्पष्ट जातीय या धार्मिक लक्ष्य था। जुलाई-अगस्त 1971 तक, 90% शरणार्थी हिंदू थे, जो बड़ी मुस्लिम आबादी वाले पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती जिलों में केंद्रित थे। पूर्वी पाकिस्तान को तबाह करने वाले 1970 के चक्रवात के लिए पश्चिमी पाकिस्तान की प्रतिक्रिया न्यूनतम थी और उसमें करुणा का अभाव था।
- **तत्काल कारण :** *शेख मुजीबुर रहमान* के नेतृत्व में अवामी लीग ने 1971 के राष्ट्रीय चुनावों में भारी जीत हासिल की और पूर्वी पाकिस्तान के लिए स्वायत्तता की मांग की। इस जीत ने उसे सरकार बनाने का अधिकार भी दिया, लेकिन पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के अध्यक्ष *जुल्फिकार अली भुट्टो* ने शेख को पाकिस्तान का प्रधानमंत्री बनने से मना कर दिया। इसने युद्ध की शुरुआत की।

पाकिस्तान पर भारत की जीत के कारक

- **युद्ध का समय :** भारत ने सर्दियों के महीनों में पाकिस्तान के खिलाफ लड़ने का फैसला किया, जब हिमालय के दर्रे बर्फ से ढके हुए